# जीवन में नहीं देखी थी कभी ऐसी तबाही

## गौरीकुंड में घोड़े-खच्चर संचालित करने वाले इशरार ने सुनाई दास्तां

अमर उजाला ब्यूरो

**नई टिहरी।** केदारनाथ क्षेत्र में आपदा से मची तबाही के बाद घोड़े-खच्चर वाले अब धीरे -धीरे घर को वापस लौटने लगे हैं। उनके आंखों में आपदा से मची तबाही का खौफ साफ झलक रहा है। उनका कहना है कि इससे पहले कभी उन्होंने केदारघाटी में ऐसी तबाही का मंजर नहीं देखा था। बाढ़ से रामबाड़ा का भूगोल ही बदल गया है।

जमीमाबाद निवासी इशरार अहमद हर वर्ष यात्रा सीजन में अपने बहनोई सकरी अहमद, जुलिफ्कार अहमद, नासिर हुसैन घोड़े-खच्चरों को लेकर केदारनाथ क्षेत्र में जाते है। इस वर्ष वे 8 लोग एक साथ 20 घोड़े- खच्चरों को लेकर केदारनाथ गए थे। काम अच्छा चल रहा था। लेकिन 16-17 जून को हुई बारिश ने उनका सपना और सुख चैन छीन लिया है।

नई टिहरी के भागीरथीपुरम से अपने गंतव्य को लौटते केदारनाथ यात्रा पर गए घोड़े-खच्चर वाले।

इशरार अहमद ने बताया कि 16 जून को वह तीन यात्रियों को लेकर केदारनाथ से वापस लौट रहे थे। शाम सात बजे रामबाड़ा पहुंचे। लगातार बारिश हो रही थी। महाराष्ट्र के जिन यात्रियों को लेकर वे वापस लौट रहे थे। उन्हें जैसे ही रामबाड़ा में उतारा, उसके कुछ देर बाद एक जलजला आया। वे लोग तुरंत ही रामबाड़ा से अपने 20 घोड़े व खच्चरों को लेकर धर्मशाला के समीप चले गए। वहां भी पानी आना शुरू हुआ तो वे जंगल की तरफ बढ़ गए। इसी दौरान कई होटल बहने लगे। लोगों में भगदड़ मच गई। कुछ लोगों को बहते हुए देखा। चारों तरफ तबाही देखकर 19 जून को वे अपने साथियों के साथ वापस लौटने लगे तो, जगह-जगह सड़के बंद थी। बड़ी मुश्किल से खच्चरों को सही सलामत निकाला है।

- रास्तों और गाड-गदेरों का पता होने से बची जान
- सब कुछ ठीक रहा तो अगले वर्ष फिर जरूरत आएंगे

नासिर हुसैन ने बताया कि घोड़े-खच्चर वाले लोग इस आपदा में कम बहे है। यात्रियों का अधिक नुकसान हुआ है। हमें रास्ते और गाड-गदेरों का पता था। इसलिए हम लोग बारिश होने पर स्थान बदलते रहे। यदि सब कुछ ठीक रहा तो वे अगले वर्ष भी घोड़े-खच्चरों को लेकर केदारनाथ-गौरीकुंड जरूर आएंगे।